गुप्त कलीसिया–9

मसीह की देह

डॉ. डेविड प्लॉट

Part 1

गुप्त कलीसिया
मसीह की देह

मैं आपको आरंभ ही में स्मरण कराना चाहता हूं कि हम इसे गुप्त कलीसिया क्यों कहते हैं। सच तो यह है कि हमारे बहुत से भाई–बहन इस अध्ययन के लिए छिपकर एकत्र होते हैं जिसमें उन्हें अपनी जान को जोखिम में डालना होता है। गुप्त कलीसिया का जन्म इसी कारण हुआ कि मैं ने ऐसे स्थानों में भूमिगत कलीसियाओं के साथ समय बिताया है। ऐसी कलीसियाओं में प्रवेश की योग्यता यह है कि आप परमेश्वर के वचन को सीखने के लिए अपनी जान की बाज़ी लगाएं। अतः मैं चाहता हूं कि आप मन में बसा लें कि संसार में हमारे भाई–बहन के लिए यह अध्ययन खेल नहीं है।

पिछले ही सप्ताह की घटनाएं हैं। उज़बेकिस्तान में आवासीय कलीसिया की सभा के समय एक घर पर 20 पुलिस कर्मियों ने धावा बोला और कलीसिया के सदस्यों को पीटा गया तथा धमकाया गया। उनके बच्चों के हाथों से बाइबल छीन कर फाड़ दी गईं और उस घर के प्राचीनों को बन्दी बनाया गया। अज़रबेजान उत्तरी नगर, कासार में एक घर पर धावा बोला गया। वहां बेपटिस्ट चर्च की आराधना होती है। उनके चार अगुवों को बन्दी बना लिया गया है और उन पर अभियोग चलाया जा रहा है। भारत के आसाम राज्य में दो आराधनालय और विश्वासियों के 400 घर तोड़े और जलाए गए। एक हज़ार से अधिक परिवार–बच्चे, शिशु, गर्भवती महिलाएं और रोगी भाई–बहन इस समय बेघर हैं। उस समाचार का शीर्षक था, "खुले आकाश तले ठंडी रातें बिताते हुए।"

आपने बगदाद का समाचार सुना होगा "विगत सात वर्षों में मसीही जनों पर सबसे बड़ा घातक हमला।" वहां कट्टरपंथियों ने एक कलीसिया में प्रवेश करके गोलियां बरसानी आरंभ कर दीं। आराधनालय में 100 आराधक उपस्थित थे। एक अगुवे ने याचना करने का प्रयास किया तो उसे भूमि पर गिराकर उसका शरीर गोलियों से छलनी कर दिया। उन्होंने चार घण्टे तक आराधकों को बन्दी बनाए रखा जब तक कि अधिकारियों के साथ उनका युद्ध समाप्त नहीं हुआ और परिणामस्वरूप 46 आराधक मारे गए। राहतकर्मी

जब वहां पहुंचे तो दीवारों पर खून के छीटें और फर्श पर मांस बिखरा पड़ा था। कट्टरपंथियों की सार्वजनिक घोषणा थी, "सब मसीही संस्थाएं, अगुवे और शिष्य हमारे लिए वैधानिक लक्ष्य हैं– जहां भी हों।"

मध्य एशिया के भूमिगत कलीसिया के भाई ने हमारे आराधनालय को कहा, "यह तो स्वर्ग है कि इतना बड़ा भवन और परमेश्वर की स्तुति गाने के लिए इतने भाई इस स्थान में उपस्थित हैं जहां आतंकवादी आपका गला काटने के लिए नहीं हैं।"

हम इसी कारण एकत्र होते हैं कि संसार में हमारे सताए जानेवाले भाइयों और बहनों के लिए प्रार्थना करें। हमारे एकत्र होने का कारण है कि हम स्वयं को झूठे और अल्पज्ञ युद्ध का स्मरण करवाएं जो हमने ही अपने लिए उत्पन्न किए हैं। ये वास्तविक युद्ध हैं। अतः यदि हम सावधान न हों तो हम सोचेंगे कि वास्तविक युद्ध खेल है, झूठे और अल्पज्ञ युद्ध हैं। मैं आपको बताना चाहता हूं कि मुख्य बात तो यह है कि हमारे भाई–बहन मध्य एशिया में बन्दीगृह में हैं और उत्तरपूर्वी भारत में खुले आकाश के नीचे हैं। संसार में अनेक स्थानों में हमारे भाई–बहन रविवार को जान जोखिम में डाल कर आराधना के लिए एकत्र होते हैं। वास्तविक युद्ध चल रहा है।

अतः हम प्रार्थना करेंगे और उनके लिए परमेश्वर को विवश करेंगे और अध्ययन भी करेंगे कि हम वचन को सीखें और परमेश्वर को जानेंगे और हम जहां भी हों वहां वरन् पृथ्वी की छोर तक इस वचन को पहुंचाएं। यह हमारा लक्ष्य है।

मैं बार–बार कहता हूं कि हमारा लक्ष्य यह नहीं कि हमारा मनोरंजन हो या यहां से जाने के बाद हम कहें, "अच्छा था" या "अच्छा नहीं था" या "मैं ने बहुत कुछ सीखा।" हम सुननेवाले ही नहीं, उत्पन्न करनेवाले हैं। दक्षिण सूडान में युद्ध के मध्य भाइयों और बहनों के बारे में विचार करें। मैं वहां एक कच्चे घर में अध्ययन करवा रहा था और मैं ने पूरे समय उनकी आंखें नहीं देखीं, इसलिए नहीं कि वे सो रहे थे परन्तु इसलिए कि वे पूरे समय लिख रहे थे। अन्त में वे मुझसे बोले कि यह उनका उत्तरदायित्व है कि वे इस शिक्षा को अपनी भाषा में अनुवाद करके अपनी जाति में सिखाएं। वे सीखने के लिए ही नहीं पुनरुत्पादन के लिए सुन रहे थे।

अतः हमारा लक्ष्य है कि सुनकर इसे संसार में अन्य भाई–बहन के लिए अनुवाद करें कि जब वे बन्दी बनाए जाने से पूर्व एक घंटे एकत्र हों तो अधिक से अधिक ज्ञान प्रदान कर पाएं। अतः हम अपना जीवन

अन्य बातों की अपेक्षा कलीसिया के विकास और पृथ्वी की छोर तक यह वचन पहुंचाने में परमेश्वर की महिमा के निमित्त काम में लें।

मैं आपके साथ एक पत्र बांटना चाहता हूं।

"प्रिय डेविड, मैं भारत से लौटा हूं और बस यही कह सकता हूं।" यीशु की स्तुति हो। हमने पिछले दो सप्ताह गुप्त कलीसिया के तीन सत्रों में पास्टर और अगुवों को प्रशिक्षण दिया। दो दिन पुराना नियम और दो दिन नया नियम और एक दिन मसीह के क्रूस की शिक्षा में लगा। जिस पास्टर ने हमें आमंत्रित किया था, उसने बताया कि वहां के स्थानीय विश्वासियों को पुराना नियम किसी ने कभी नहीं सिखाया था। उसने हमारे आरंभिक दिनों में श्रोताओं से दो बार यह प्रश्न पूछकर पुष्टि की थी। यद्यपि हमें यह जानकर दुःख हुआ कि उन पास्टरों ने पुराने नियम की शिक्षा नहीं पाई थी, हम परमेश्वर को धन्य कह रहे थे कि उसने हमें ऐसे महिमामय अवसर के लिए काम में लिया अतः हमने गुप्त कलीसिया की सामग्री का उपयोग करके उन्हें बताया कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का क्रूस हमारे विश्वास में परमेश्वर के वचन का केन्द्र है और चिताया कि मसीह और उसके क्रूस की अपेक्षा उन्हें कोई संकल्प नहीं करना है। उस एक सप्ताह के प्रशिक्षण की प्रतिक्रिया **विफल** करनेवाली थी। वे हमें धन्यवाद कहते हुए थकते नहीं थे और हम अपनी आत्मा में प्रभु यीशु को धन्यवाद देते नहीं थक रहे थे कि उसने हमें ऐसा सौभाग्य प्रदान किया। इस अध्ययन सामग्री के लिए आपको बहुत बहुत धन्यवाद। वे प्रतिदिन ध्यान से सुनकर लिखते जाते थे। मैं उन्हें देखकर और उनके उदाहरण से सीखकर अति प्रसन्न था। एक ने तो मुझसे यह भी कहा कि वे इस अध्ययन सामग्री को अन्यों के साथ बांटने के लिए उत्साह से पूर्ण है। वहां दो हिन्दू भाइयों ने प्रभु यीशु को ग्रहण किया जो हमारे लिए बड़े आनन्द की बात थी। हल्लिलूय्याह हमारे भारतीय भाइयों ने मुझे स्मरण करवाया कि लेने से देना अधिक धन्य है। धन्यवाद, यीशु का महिमान्वन हो!

कलीसिया का मान घटाने वाले व्यवहार

हमारा अध्ययन विषय है कि मसीह की देह अर्थात कलीसिया। बड़े शर्म की बात है कि मैं ने अपने सेमिनरी अध्ययन में कलीसिया विषय पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि हमारी मानसिकता है कलीसिया के मान को गिराना। अतः मैं चाहता हूं कि आप विचार करें कि हम कलीसिया के मान को कैसे गिराते हैं। हमारी स्वतंत्रता के कारण हम कलीसिया को महत्वहीन समझते हैं। हमारी पापी दशा में हम स्वाधीन और

आत्मनिर्भर हैं। मसीही धर्म में भी हम सोचते हैं कि हम स्वयं ही सब कुछ कर सकते हैं, क्या स्थानीय कलीसिया इतनी बड़ी बात है? क्या कलीसिया एक औपचारिकता और अनावश्यक नहीं है?

मेरे विचार में यह हमारी स्वतंत्रता ही नहीं हमारी अपरिपक्वता है। रोचक बात तो यह है कि मसीही जन प्रायः कहते हैं कि उन्हें कलीसिया की आवश्यकता नहीं है। उनके कहने का अभिप्राय होता है कि वे कलीसिया के बिना ही मसीह में विकास कर रहे हैं। यह उनकी समझ में परिपक्व होना है। वे कहते हैं, "मैं मसीह से प्रेम करता हूं परन्तु कलीसिया को सहन नहीं कर सकता।" ऐसा कभी न कहें।

कलीसिया मसीह की दुल्हन है। मैं आपसे कहूं, "मैं आपसे प्रेम करता हूं परन्तु मैं आपकी पत्नी को सहन नहीं कर सकता।" तो क्या आप मुझे धन्यवाद कहेंगे? ऐसा कहना अविकसित विचारों का प्रकटीकरण है। यह अनुचित है। हमारी स्वतंत्रता में, हमारी अपरिपक्व मानसिकता में हम कलीसिया को महत्वहीन समझते हैं।

हम व्यवहार में उपयोगी को ही सत्य मानते हैं जिसके कारण कलीसिया प्रदूषित हो गई है। यह एक खतरनाक विधि है। हमारा आशय तो सही है क्योंकि हम अधिक से अधिक लोगों को लाना चाहते हैं परन्तु इस प्रयास में हम भीड़ एकत्र करनेवाली सांसारिक युक्तियां काम में लेने लगते हैं और कलीसिया को प्रदूषित कर देते हैं। हम सोचते हैं कि हम परमेश्वर पर उपकार कर रहे हैं। परन्तु हमारी व्यावहारिकता कलीसिया को प्रदूषित करती है।

अपने मिशन कार्यों द्वारा हम कलीसिया का मान घटाते हैं। यह एक त्रासदी है। कलीसिया इतनी अधिक व्यस्त है कि शिष्य बनाना और मिशन कार्य पर कोई ध्यान नहीं देता है। इसका परिणाम यह होता है कि मिशन संस्थाओं और गैर कलीसियाई कार्यों का विकास होता है। मैं उन्हें गलत नहीं कहता हूं। परन्तु यह सच है कि शिष्य बनाने और अन्यजातियों में सुसमाचार सुनाने की चर्चा अधिकतर इन संस्थाओं से ही सुनने को मिलती है। कलीसिया से हटकर करना या कलीसिया के परिक्षेत्र में करना वास्तव में मूर्खता ही है। परमेश्वर ने अपने महान आदेश की पूर्ति के निमित्त केवल कलीसिया को ही आशिष देने की प्रतिज्ञा की है। हम कलीसिया को छोड़ आगे बढ़कर यह न सोचें कि हम कलीसिया पर उपकार कर रहे हैं।

एक बार मुझे एक बहुत बड़ी संख्या में वचन बांटने के लिए बुलाया गया था। वहां वाद–विवाद उत्पन्न हो गया। उनमें से एक ने कहा, "हमारा सिद्धान्त कलीसिया के साथ यह था, 'आप करें और हम सहायता

दें।'" उन्होंने कहा, "हमने जो किया वह यह है, 'हम करेंगे आप सहायता देंगे।' हम विकास के मुद्दे से चूक गए हैं।" और उन्होंने कलीसिया को मंच बनाने पर विचार–विमर्श आरंभ कर दिया। हमें इसी की आवश्यकता है।

एक और मानसिकता है। मिशन संस्थान कहते हैं, "एक हज़ार कलीसियाएं स्थापित करेंगे।" मैं संस्थाओं को दोष नहीं दे रहा परन्तु कलीसिया को ही मंच होना है। अब आप पूछेंगे, "कलीसिया क्या है?" यदि आप सोचते हैं कि आराधनालय बना देना ही कलीसिया स्थापित करना है। यह एक झूठ है। मुझे किसी ने कहा, "आप बीस रुपये में कलीसिया स्थापित कर सकते हैं।" यह कलीसिया का अपमान करना है।

हमारी परम्पराएं भी कलीसिया का मान घटाती हैं। जब हम कलीसिया के बारे में सोचते हैं तो हम परमेश्वर के सत्य से बढ़कर परम्पराओं को कलीसिया मानते हैं। हम आराधनालय को देखकर कहते हैं एक कलीसिया यहां भी है। धर्मशास्त्र में आराधनालय बनाने की एक भी आज्ञा नहीं है और न ही कभी आराधना स्थल को कलीसिया कहा गया है। हम अपनी कलीसियाओं को कार्यक्रमों और परम्पराओं से भर देते हैं जो बाइबल आधारित नहीं हैं। यदि आप किसी कलीसिया से कुछ कार्यक्रम और गतिविधियां हटा दें तो वह तृतीय महायुद्ध जैसी दिखाई देगी। हमने अपनी परम्पराओं को परमेश्वर के सत्य से बड़ा बना दिया है।

यदि आप उन कलीसियाओं में जाएं जहां भाई बहन छिपकर आराधना करते हैं तो वहां ऐसा कुछ भी नहीं दिखाई देगा–मध्य एशिया की अर्धरात्री आराधना जहां आपको काले कपड़ों में सिर ढांक कर चांद की रोशनी में एक गांव में ले जाया जाता है। वहां एक छोटे कमरे में 60 आराधक एकत्र हैं। वे मानते हैं कि परमेश्वर का आत्मा, परमेश्वर का वचन और परमेश्वर के जन परमेश्वर के कार्य को पूरा कर सकते हैं। अब प्रश्न यह है, "क्या यह हमारे लिए पर्याप्त है?"

हम परमेश्वर के सत्य से बढ़कर परम्पराओं को स्थान देते हैं। दूसरा हम परमेश्वर की प्राथमिकताओं से बढ़कर अपनी अधिमान्यताओं को स्थान देते हैं। मेरे मन में इसका द्वन्द चल रहा है परन्तु संसार में 50 करोड़ लोग जो भूखमरी की सीमा पर हैं, उन्हें भोजन, पानी, मौलिक दवाइयों की कमी है, बच्चे दस्तरोग से मर रहे हैं। यदि वे जीवित हैं तो मानसिक क्षति और प्रोटीन के अभाव से बीमार होंगे। कुछ बन्धुआ श्रम में बेचे जाएंगे। पन्द्रह करोड़ बच्चे अनाथ हैं तथापि हम कहते हैं कि हमारे आराधनालय में गाड़ी खड़ी करने का अधिक अच्छा स्थान होना चाहिए। परमेश्वर के लिए सब से अधिक महत्व किस बात का है? यदि हम

परमेश्वर के महत्व की बातों को अपनी अधिमान्यता से बढ़कर स्थान दें तो क्या होगा? एक गंभीर परिवर्तन आ जाएगा।

यदि हम सावधान न रहे तो हम कलीसिया को अपनी व्यक्तिगत सुविधा के अनुरूप कहेंगे। यदि मुझे वहां अच्छा लगता है तो कलीसिया अच्छी है बाज़ार की नाईं हम कलीसियाओं का चक्कर काटकर देखते हैं कि मेरे लिए कौन सी कलीसिया चलेगी। मुझे गाड़ी खड़ी करने के लिए एक अच्छा स्थान चाहिए। मुझे ऐसी आराधना चाहिए जिसमें मुझे आनन्द प्राप्त हो और समय पर समाप्त हो कि मैं यातायात में न फंसूं। क्या हमारे विश्वव्यापी भाई बहन ऊंची आवाज़ में नहीं कहते, "आप चूक रहे हैं।" अपनी परम्पराओं को त्याग कर अपनी अधिमान्यताओं को पुनःव्यवस्थित करो अपने आराधनालय और सुख–सुविधा से मुक्ति पाओ। कलीसिया का अर्थ है सुसमाचार और मसीह की महिमा को पृथ्वी की छोर तक पहुंचाने के लिए जान की बाज़ी लगाना।

हमें कलीसिया को क्यों संजोए रखना है...

हम कलीसिया का मान नहीं घटा सकते। हमें एक प्रश्न पूछना है, "कलीसिया क्या है? कलीसिया का सार क्या है? कलीसिया में आवश्यक क्या है उन बातों पर विचार करें जिनके कारण कलीसिया का मान अनजाने में घट जाता है और हमें कलीसिया को क्यों संजोए रखना है?" पहला कारण– क्योंकि हम परमेश्वर की महिमा से लगाव रखते हैं। आरंभ ही से परमेश्वर के स्वभाव ने मंच प्रदान किया है जिससे हम समुदाय को समझ पाएं। परमेश्वर चाहता है कि उसकी महिमा इस संसार में हमारे समुदाय का आधार हो। यीशु ने क्रूस पर चढ़ाए जाने से पूर्व अपने शिष्यों के विषय कहा था– यूहन्ना 17:20–23, "मैं केवल इन्हीं के लिये विनती नहीं करता, परन्तु उनके लिये भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों; जैसा तू हे पिता मुझ में हैं, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हों, जिससे संसार विश्वास करे कि तू ही ने मुझे भेजा है। वह महिमा जो तू ने मुझे दी मैं ने उन्हें दी है, कि वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम एक हैं, मैं उन में और तू मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएं, और संसार जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा वैसा ही उनसे प्रेम रखा।"

उसके अनुयायी भी आपस में वैसी ही एकता रखें जैसी प्रभु यीशु और पिता परमेश्वर में थी। परमेश्वर चाहता है कि हमारा समुदाय संसार में उसकी महिमा की छवि हों। इससे संसार जानेगा कि प्रभु यीशु को पिता परमेश्वर ने भेजा था।

संसार परमेश्वर को नहीं देख सकता परन्तु कलीसिया को देख सकता है और कलीसिया में एकता देखकर वे पिता परमेश्वर के प्रेम को देख सकते हैं जो पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा परस्पर बांटते हैं। कलीसिया में लुचपन देखकर वे परमेश्वर का सम्मान नहीं करते हैं। अतः हमें इफिसियों 3 के अनुसार होना है– इफिसियों 3:20–21, "अब जो ऐसा सामर्थी है कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है, कलीसिया में और मसीह यीशु में उसकी महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन।"

हम कलीसिया को संजोते हैं क्योंकि हम परमेश्वर की महिमा से लगाव रखते हैं। दूसरा कारण, क्योंकि हम परमेश्वर के पुत्र को सराहते हैं। प्रभु यीशु ने कलीसिया की स्थापना की है। मत्ती 16:18, "और मैं भी तुझ से कहता हूं कि तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।"

उसने कलीसिया को मूल्य देकर लिया है– अपने लहू से। प्रेरितों के काम 20:28, "इसलिये अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है, कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है।"

अतः हमें कलीसिया के लिए स्वयं को देना है, कलीसिया से प्रेम करना है और अपना जीवन समर्पित करना है।

प्रभु यीशु कलीसिया के साथ अपनी पहचान बनाता है। प्रभु यीशु ने शाऊल/पौलुस से कहा था– प्रेरितों के काम 9:4, "वह भूमि पर गिर पड़ा और यह शब्द सुना, "हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?"

पौलुस मन परिवर्तन से पूर्व कलीसिया को सताता था तो प्रभु यीशु ने उससे कहा कि कलीसिया को सताना, उसे सताना है।

हम परमेश्वर के पुत्र को सराहते हैं क्योंकि हम में परमेश्वर का आत्मा वास करता है।

1 कुरिन्थियों 3:16, "क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?"

परमेश्वर का आत्मा कलीसिया में वास करता है। यही उपमा इफिसियों 2:19–22 में दी गई है, "इसलिये तुम अब विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए। और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर, जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं ही है, बनाए गए हो। जिसमें सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है, जिसमें तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवासस्थान होने के लिये एक साथ बनाए जाते हो।"

कलीसिया में पवित्र आत्मा बसता है क्योंकि हम परमेश्वर के सुसमाचार का मान रखते हैं। परमेश्वर ने अपने सुसमाचार के प्रचार हेतु कलीसिया की योजना बनाई है। उस महान आदेश का आशय है, कलीसिया सुसमाचार सुनाए। मत्ती 28:18–20, "यीशु ने उनके पास आकर कहा, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओः और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।"

कलीसिया सुसमाचार की रक्षा के लिए है। 2 तीमुथियुस 1:13–14, "जो खरी बातें तू ने मुझ से सुनी हैं उनको उस विश्वास और प्रेम के साथ जो मसीह यीशु में है, अपना आदर्श बनाकर रख। और पवित्र आत्मा के द्वारा जो हम में बसा हुआ है, इस अच्छी धरोहर की रखवाली कर।"

परमेश्वर की स्तुति हो कि सदियों से विश्वासयोग्य स्त्री –पुरुषों ने पीढ़ी से पीढ़ी सुसमाचार पहुंचाया है। हम अकस्मात ही दृश्य में नहीं उभरे हैं। हम अनेक भाइयों और बहनों के ऋणी हैं जिन्होंने हमसे पूर्व सुसमाचार की रखवाली की है।

कलीसिया सुसमाचार प्रदर्शन के लिए है। इफिसियों 3:10–11, "ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का विभिन्न प्रकार का ज्ञान उन प्रधानों और अधिकारियों पर जो स्वर्गीय स्थानों में हैं, प्रगट किया जाए। उस सनातन मनसा के अनुसार जो उसने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थीं।"

परमेश्वर ने कलीसिया को ऐसा बनाया है कि सुसमाचार का प्रदर्शन हो। अतः कलीसिया का रूप बिगाड़ने का अर्थ है, सुसमाचार को बिगाड़ना।

हम परमेश्वर के सुसमाचार का मान रखते हैं क्योंकि हम अपने जीवन में संतोष पाना चाहते हैं। यहां स्वार्थ का अंश है। हम अपनी ही भलाई के लिए कलीसिया को संजोए रखते हैं। उत्पत्ति 1:26–27, "फिर परमेश्वर ने कहा, "हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगनेवाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें।" तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उस ने मनुष्यों की सृष्टि की।"

ध्यान से सुनें। उत्पत्ति 1 में परमेश्वर ने हमें बनाया कि हम उसमें जीवन का आनन्द लें और हम उसके स्वरूप में इसलिए सृजे गए हैं कि उसके साथ संबन्ध बनाकर आनन्द लें परन्तु स्मरण रखें, परमेश्वर ने अन्य विश्वासियों के साथ जीवन का अनुभव प्राप्त करने के लिए भी बनाया है। संसार में पाप के आगमन से पूर्व बाइबल कहती है– उत्पत्ति 2:18, "फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, "आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं; मै उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊंगा जो उस से मेल खाए।"

अभी परमेश्वर को एक काम और करना था। पुरुष अकेला था। उसे एक साथी की आवश्यकता थी, एक स्त्री की। निःसन्देह हमें परमेश्वर के साथ जीवन का आनन्द लेने के लिए सृजा गया था परन्तु एक दूसरे के साथ जीवन का अनुभव लेने के लिए भी सृजा गया था। कभी कोई अकेला पड़ जाता है तो हम कहते हैं, "निराश न हों, परमेश्वर आपके साथ है।" निःसन्देह परमेश्वर हमारे लिए पर्याप्त है परन्तु परमेश्वर ने हमें इस संसार में अकेले रहने के लिए नहीं बनाया है। उसने हमें जीवन का अनुभव पाने के लिए बनाया है। अतः हमारे लिए अकेला रहना अच्छा नहीं है। परमेश्वर कहता है कि हमें एक दूसरे की आवश्यकता है।

मैं ने एक विश्वविद्यालय का सर्वेक्षण पढ़ा जिसमें उन्होंने 9 वर्षों में 7,000 मनुष्यों का अध्ययन किया। उनके अनुसार अकेले रहनेवाले मनुष्यों में तीन गुणा अधिक मरने की संभावना थी चाहे उनका व्यवहार स्वास्थ्यवर्धक था अपेक्षा उनके जो स्वास्थ्य संबन्धित हानिकारक व्यवहार रखते थे जैसे धूम्रपान, अनुचित भोजन, मोटापा, शराब आदि परन्तु उनके सामाजिक संबन्ध व्यापक थे। इससे स्पष्ट होता है कि मनुष्य को समुदाय की आवश्यकता है।

हमें अपने जीवन में पवित्रता की आवश्यकता है और हम कलीसिया को संजोए रखते हैं क्योंकि हम खोए हुओं का उद्धार चाहते हैं। धर्मशास्त्र में हम पारस्परिक प्रेम की चर्चा देखते हैं और कलीसिया में वह प्रेम उनके लिए प्रदर्शित होना है जो मसीह को नहीं जानते। यूहन्ना 13:34–35 में यह अति स्पष्ट है, "मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं कि एक दूसरे से प्रेम रखो; जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। यदि आपस में प्रेम रखोगे, तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो।"

प्रेरितों के काम 5:13–14, "परन्तु औरों में से किसी को यह हियाव न होता था कि उनमें जा मिले; तौभी लोग उनकी बड़ाई करते थे। विश्वास करनेवाले बहुत से पुरुष और स्त्रियां प्रभु की कलीसिया में और भी अधिक आकर मिलते रहे।"

कलीसिया की प्रतिष्ठा बहुत थी और असंख्य स्त्री पुरुष कलीसिया में जुड़ रहे थे।

कलीसिया के विकास के साथ साथ शान्ति भी देखी जाती है।

प्रेरितों के काम 9:31, "इस प्रकार सारे यहूदिया, और गलील, और समरिया में कलीसिया को चैन मिला, और उसकी उन्नति होती गई; और वह प्रभु के भय और पवित्र आत्मा की शान्ति में चलती और बढ़ती गई।"

कलीसिया को संजोए रखने का यही कारण है क्योंकि हम पृथ्वी की छोर तक सुसमाचार ले जाना चाहते हैं। प्रकाशितवाक्य में परमेश्वर की इच्छा प्रकट है कि हर एक जाति, भाषा, कुल परमेश्वर की महिमा करे। प्रकाशितवाक्य 5:9–10, "वे यह नया गीत गाने लगे, "तू इस पुस्तक के लेने, और इसकी मुहरें खोलने के योग्य है; क्योंकि तूने वध होकर अपने लहू से हर एक कुल और भाषा और लोग और जाति में से परमेश्वर के लिये लोगों को मोल लिया है, और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिये एक राज्य और याजक बनाया; और वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं।"

अब यहां से हम कहां जाएंगे?

हम चार प्रश्नों पर ध्यान देंगेः कलीसिया क्या है? हम कलीसिया के लिए परमेश्वर की परिभाषा देखेंगे। परमेश्वर अपने वचन में किसे कलीसिया कहता है। कलीसिया का काम क्या है? हमने देखा है कि

कलीसिया की अधिकांश गतिविधियां परमेश्वर की इच्छा में नहीं हैं। हम परमेश्वर की योजना देखेंगे। कलीसिया की अगुआई कैसे करें? कलीसियाई व्यवस्था का स्पष्टीकरण! क्या परमेश्वर ने कलीसिया की ईमारत की इच्छा रखी है? अन्त में, कलीसिया किस ओर अग्रसर है? हम कलीसिया के भविष्य के संबन्ध में आश्वासन पाना चाहते हैं।

कलीसिया क्या है?

अपने लोगों के लिए परमेश्वर की परिभाषा

कलीसिया की परिभाषा

किसी विद्वान ने कहा कि नये नियम में कलीसिया की 96 विभिन्न परिभिाषाएं हैं। मैं मार्क डेवर द्वारा दी गई परिभाषा पर ध्यान देना चाहता हूं क्योंकि वह कलीसिया की महान परिभाषा है यद्यपि यह बाइबल आधारित नहीं है परन्तु मेरे विचार में इस परिभाषा में कलीसिया के विविध रूपों का सारांश है। पहले तो हम सामान्यतः देखेंगे फिर विशेष रूप से ध्यान देंगे।

परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा मसीह में विश्वास के आधार पर इस संसार में उसकी सेवा करके उसके महिमान्वन के निमित्त बुलाए गए मनुष्यों का समूह। यहां मुख्य शब्द है, "बुलाए गए।"

मनुष्यों का समूह...

कलीसिया मनुष्यों का समूह है। नये नियम में कलीसिया शब्द 114 बार आया है।

पुराने नियम की प्रजा के संबन्ध में दो बार इस शब्द का प्रयोग किया गया है– प्रेरितों के काम 7:38, "यह वही है, जिसने जंगल में कलीसिया के बीच उस स्वर्गदूत के साथ सीनै पहाड़ पर उससे बातें कीं और हमारे बापदादों के साथ था, उसी को जीवित वचन मिले कि हम तक पहुंचाए।"

इब्रानियों 2:12, "वह कहता है, "मैं तेरा नाम अपने भाइयों को सुनाऊंगा; सभा के बीच में मैं तेरा भजन गाऊंगा।"

यह पुराने नियम की प्रजा के एकत्र होने के संदर्भ में है। तीन बार इसका उपयोग सांसारिक सभा के संदर्भ में किया गया है। प्रेरितों के काम 19:32, "वहां कोई कुछ चिल्लाता था और कोई कुछ, क्योंकि सभा में बड़ी गड़बड़ी हो रही थी, और बहुत से लोग तो यह जानते भी नहीं थे कि हम किस लिये इकट्ठे हुए हैं।"

प्रेरितों के काम 19:39, "परन्तु यदि तुम किसी और बात के विषय में कुछ पूछना चाहते हो, तो नियत सभा में फैसला किया जाएगा।"

प्रेरितों के काम 19:41, "यह कहकर उसने सभा को विदा किया।"

ये तीनों अवसर उन मनुष्यों की सभा के हैं जो प्रभु यीशु के अनुयायी हैं।

परन्तु 709 बार इसका उपयोग मसीह सभा के संदर्भ में किया गया है। 1 कुरिन्थियों 1:2, "परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस में है, अर्थात् उनके नाम जो मसीह यीशु में पवित्र किए गए, और पवित्र होने के लिये बुलाए गए हैं; और उन सब के नाम भी जो हर जगह हमारे और अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम की प्रार्थना करते हैं।"

2 थिस्सलुनीकियों 1:4, "यहां तक कि हम आप परमेश्वर की कलीसिया में तुम्हारे विषय में घमण्ड करते हैं कि जितने उपद्रव और क्लेश तुम सहते हो, उन सब में तुम्हारा धीरज और विश्वास प्रगट होता है।"

अतः कलीसिया का अर्थ है परमेश्वर द्वारा बुलाए गए।

रोमियों 1:6–7, "जिनमें से तुम भी यीशु मसीह के होने के लिये बुलाए गए हो। उन सब के नाम जो रोम में परमेश्वर के प्यारे हैं और पवित्र होने के लिये बुलाए गए हैं: हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।"

अर्थात कलीसिया परमेश्वर के बुलाए गए जनों का समूह है जो एक दूसरे के साथ सहभागिता करते हैं। रोमियों 2:5 में लिखा है कि हम एक दूसरे के अंग हैं। अतः कलीसिया एक समुदाय है।

कलीसिया सांसारिक समुदाय है जिसका स्वार्गिक गन्तव्य स्थान है।

इब्रानियों 12:22–23, "पर तुम सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवते परमेश्वर के नगर, स्वर्गीय यरूशलेम, के पास और लाखों स्वर्गदूतों और उन पहिलौठों की साधारण सभा और कलीसिया, जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं, और सब के न्यायी परमेश्वर के पास, और सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं..."

यह स्वार्गिक कलीसिया का चित्रण है। कलीसिया स्वार्गिक गन्तव्य स्थान के निमित्त सांसारिक समुदाय है।

कलीसिया एक जाति भी है– 1 पतरस 2:9–10, "पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज–पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिये कि जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो। तुम पहले तो कुछ भी नहीं थे पर अब परमेश्वर की प्रजा हो; तुम पर दया नहीं हुई थी पर अब तुम पर दया हुई है।"

कलीसिया परमेश्वर के जनों की एक जाति है– एक परिवार है।

कलीसिया एक परिवार है। हम पुत्र–पुत्री हैं।

गलातियों 3:26, "क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो।"

2 कुरिन्थियों 6:17–18, "इसलिये प्रभु कहता है, "उनके बीच में से निकलो और अलग रहो; और अशुद्ध वस्तु को मत छूओ, तो मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा; और तुम्हारा पिता हूंगा, और तुम मेरे बेटे और बेटियां होगे। यह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का वचन है।"

हम भाई–बहन हैं।

1 तीमुथियुस 5:1–2, "किसी बूढ़े को न डांट, पर उसे पिता जानकर समझा दे, और जवानों को भाई जानकर; बूढ़ी स्त्रियों को माता जानकर; और जवान स्त्रियों को पूरी पवित्रता से बहिन जानकर समझा दे।"

1 यूहन्ना 3:14–18, "हम जानते है, कि हम मृत्यु से पार होकर जीवन में पहुंचे हैं; क्योंकि हम भाइयों से प्रेम रखते हैं। जो प्रेम नहीं रखता वह मृत्यु की दशा में रहता है। जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह हत्यारा है; और तुम जानते हो कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं रहता। हम ने प्रेम इसी से जाना कि उसने हमारे लिये अपने प्राण दे दिए; और हमें भी भाइयों के लिये प्राण देना चाहिए। पर जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस खाना न चाहे, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम कैसे बना रह सकता है? हे बालको, हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें।"

उदाहरणः एक युवक मसीह को ग्रहण कर लेता है तो उसे घर से निकाल दिया जाता है। उसका परिवार और उसका समाज उससे संबन्ध विच्छेद कर लेता है। अब वह कहां जाए। यहां भाई–बहन उसके काम आते हैं। उसके पास परमेश्वर का परिवार है। वह इस परिवार का सदस्य है।

कलीसिया दुल्हन है।

इफिसियों 5:25–27, "हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखा, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिये दे दिया कि उसको वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध करके पवित्र बनाए, और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिसमें न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो, वरन् पवित्र और निर्दोष हो।"

2 कुरिन्थियों 11:2, "क्योंकि मैं तुम्हारे विषय मे ईश्वरीय धुन लगाए रहता हूं, इसलिये कि मैं ने एक ही पुरुष से तुम्हारी बात लगाई है कि तुम्हें पवित्र कुंवारी के समान मसीह को सौंप दूं।"

प्रकाशितवाक्य 12 में मेम्ने का विवाह है और कलीसिया उसकी दुल्हन है। कलीसिया परमेश्वर की रचना (ईमारत) है।

परन्तु ईंट, पत्थर की बनी ईमारत नहीं, परमेश्वर की महिमा का निवासस्थान जैसे पुराने नियम में था।

1 कुरिन्थियों 3:9, "क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं; तुम परमेश्वर की खेती और परमेश्वर की रचना हो।"

इब्रानियों 3:3–6, "क्योंकि यीशु मूसा से इतना बढ़कर महिमा के योग्य समझा गया है, जितना कि घर का बनानेवाला घर से बढ़कर आदर रखता है। क्योंकि हर एक घर का कोई न कोई बनानेवाला होता है, पर जिसने सब कुछ बनाया वह परमेश्वर है। मूसा तो उसके सारे घर में सेवक के समान विश्वासयोग्य रहा कि जिन बातों का वर्णन होनेवाला था, उन की गवाही दे। परन्तु मसीह पुत्र के समान परमेश्वर के घर का अधिकारी है; और उसका घर हम हैं, यदि हम साहस पर और अपनी आशा के घमण्ड पर अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें।"

कलीसिया परमेश्वर का मन्दिर है।

1 तीमुथियुस 3:15, "कि यदि मेरे आने में देर हो, तो तू जान ले कि परमेश्वर के घराने में जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया है और जो सत्य का खंभा और नींव है, कैसा बर्ताव करना चाहिए।"

कलीसिया परमेश्वर के आत्मा का निवासस्थान है।

इफिसियों 2:19–22, "इसलिये तुम अब विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए। और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर, जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं ही है, बनाए गए हो। जिसमें सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है, जिसमें तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवासस्थान होने के लिये एक साथ बनाए जाते हो।"

कलीसिया परमेश्वर की महिमा का प्रदर्शन है।

1 पतरस 2:4–5, "उसके पास आकर, जिसे मनुष्यों ने तो निकम्मा ठहराया परन्तु परमेश्वर के निकट चुना हुआ और बहुमूल्य जीवता पत्थर है, तुम भी आप जीवते पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हैं।"

इस्राएल के मन्दिर का मुख्य उद्देश्य यही था और नया नियम हमें कलीसिया की यही शिक्षा देता है।

कलीसिया खेत है।

1 कुरिन्थियों 3:6–9, "मैं ने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया। इसलिये न तो लगानेवाला कुछ है और न सींचनेवाला, परन्तु परमेश्वर जो बढ़ानेवाला है। लगानेवाला और सींचनेवाला दोनों एक हैं; परन्तु हर एक व्यक्ति अपने ही परिश्रम के अनुसार अपनी ही मजदूरी पाएगा। क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं; तुम परमेश्वर की खेती और परमेश्वर की रचना हो।"

परमेश्वर अपनी फसल उगा रहा है और कटनी काटेगा।

कलीसिया एक वृक्ष है।

रोमियों 11:17–24, "पर यदि कुछ डालियां तोड़ दी गईं, और तू जंगली जैतून होकर उनमें साटा गया, और जैतून की जड़ की चिकनाई का भागी हुआ है, तो डालियों पर घमण्ड न करना; और यदि तू घमण्ड करे तो जान रख कि तू जड़ को नहीं परन्तु जड़ तुझे सम्भालती है। फिर तू कहेगा, "डालियां इसलिये तोड़ी गईं कि मैं साटा जाऊं।" ठीक है, वे तो अविश्वास के कारण तोड़ी गईं, परन्तु तू विश्वास से बना रहता है इसलिये अभिमानी न हो, परन्तु भय मान, क्योंकि जब परमेश्वर ने स्वाभाविक डालियों को न छोड़ा तो तुझे भी न छोड़ेगा। इसलिये परमेश्वर की कृपा और कड़ाई को देख! जो गिर गए उन पर कड़ाई, परन्तु तुझ पर कृपा, यदि तू उसमें बना रहे, नहीं तो तू भी काट डाला जाएगा। वे भी यदि अविश्वास में न रहें, तो साटे जाएंगे; क्योंकि परमश्वेर उन्हें फिर साट सकता है। क्योंकि यदि तू उस जैतून से, जो स्वभाव से जंगली है, काटा गया और स्वभाव के विरुद्ध अच्छे जैतून में साटा गया, तो ये जो स्वाभाविक डालियां हैं, अपने ही जैतून में क्यों न साटे जाएंगे।"

हम प्रभु यीशु –दाखलता की डालियां हैं।

यूहन्ना 15:5, "मैं दाखलता हूं: तुम डालियां हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।"

कलीसिया याजकवर्ग है।

1 पतरस 2:4–9, "उसके पास आकर, जिसे मनुष्यों ने तो निकम्मा ठहराया परन्तु परमेश्वर के निकट चुना हुआ और बहुमूल्य जीवता पत्थर है, तुम भी आप जीवते पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हैं। इस कारण पवित्र शास्त्र में भी आया है, "देखो, मैं सिय्योन में कोने के सिरे का चुना हुआ और बहुमूल्य पत्थर धरता हूं: और जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह किसी रीति से लज्जित नहीं होगा।" अतः तुम्हारे लिये जो विश्वास करते हो वह तो बहुमूल्य है, पर जो विश्वास नहीं करते उनके लिये जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा हो गया," और "ठेस लगने का पत्थर और ठोकर खाने की चट्टान हो गया है," क्योंकि वे तो वचन को न मानकर ठोकर खाते हैं और इसी के लिये वे ठहराए भी गए थे। पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज–पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिये कि जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो।"

इस्राएल के याजकों को मन्दिर में सेवा करने के कारण अन्यों से अधिक परमेश्वर की महिमा का बोध था। पतरस कहता है कि कलीसिया राजसी याजक है। केवल प्रभु यीशु ही हमारा महायाजक है।

प्रकाशितवाक्य 1:5–6, "और यीशु मसीह की ओर से जो विश्वासयोग्य साक्षी और मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहिलौठा और पृथ्वी के राजाओं का हाकिम है, तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे। वह हम से प्रेम रखता है, और उसने अपने लहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है, और हमें एक राज्य और अपने पिता परमेश्वर के लिये याजक भी बना दिया; उसी की महिमा और पराक्रम युगानुयुग रहे। आमीन।"

प्रकाशितवाक्य 5:10, "और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिये एक राज्य और याजक बनाया; और वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं।"

आप परमेश्वर के पास सीधे आ सकते हैं और उसकी महिमा का अन्तरंग ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

कलीसिया एक देह है।

इफिसियों 1:22–23, "और सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया; और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया, यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है।"

हम संयोजित देह हैं।

इफिसियों 4:4–6, "एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है। एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा, और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर और सब के मध्य में और सब में है।"

हम एक विविध देह हैं।

इफिसियों 1:22–23, "और सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया; और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया, यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है।"

रोमियों 12:4–5, "क्योंकि जैसे हमारी एक देह में बहुत से अंग हैं, और सब अंगों का एक ही सा काम नहीं; वैसा ही हम जो बहुत हैं, मसीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं।"

मसीह में विश्वास द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह से बुलाए गए...

एक प्रश्न है। आप बुलाए गए में से एक कैसे हो? यदि आपने मसीह को ग्रहण नहीं किया है या आप केवल मसीही धर्म को समझने के लिए हैं तो मैं प्रार्थना करता हूं कि परमेश्वर इसी क्षण अपने आत्मा के द्वारा आपको बुलाए। विचार करें कि हम पहले पाप में क्या थे? इफिसियों 2:1–3, "उसने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे जिनमें तुम पहले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है। इनमें हम भी सब के सब पहले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, और शरीर और मन की इच्छाएं पूरी करते थे, और अन्य लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे।"

पौलुस शब्दों से खेलता नहीं है। वह स्पष्ट कहता है कि हम पापों में मरे हुए थे। हम में आत्मिक जीवन नहीं था। दफन के समय मैं यही सोचता हूं कि हम पहले पापों में मरे हुए थे।

एक शिक्षक अपने विद्यार्थियों को कब्रिस्तान ले गया और वहां उन्हें प्रचार करने के लिए कहा। वे विमूढ़ उसे देखने लगे परन्तु उसके बाध्य करने पर उन्होंने एक एक करके प्रचार किया। परन्तु मुर्दों ने प्रतिक्रिया नहीं दिखाई। अन्त में शिक्षक ने कहा, "जब आप प्रचार करते हैं तब आप वास्तव में पाप में मरे हुओं से बातें करते हैं।"

योना 3:3–8, "तब योना यहोवा के वचन के अनुसार नीनवे को गया। नीनवे एक बहुत बड़ा नगर था, वह तीन दिन की यात्रा का था। योना ने नगर में प्रवेश करके एक दिन की यात्रा पूरी की, और यह प्रचार करता गया, "अब से चालीस दिन के बीतने पर नीनवे उलट दिया जाएगा।" तब नीनवे के मनुष्यों ने परमेश्वर के वचन की प्रतीति की; और उपवास का प्रचार किया गया और बड़े से लेकर छोटे तक सभों ने टाट ओढ़ा। तब यह समाचार नीनवे के राजा के कान में पहुंचा; और उसने सिंहासन पर से उठ, अपने राजकीय वस्त्र उतारकर टाट ओढ़ लिया, और राख पर बैठ गया। राजा के प्रधानों से सम्मति लेकर नीनवे में इस आज्ञा का ढिंढोरा पिटवायाः "क्या मनुष्य, क्या गाय–बैल, क्या भेड़–बकरी, या और पशु, कोई कुछ भी न खाएं; वे न खांए और न पानी पीएं। मनुष्य और पशु दोनों टाट ओढें, और वे परमेश्वर की दोहाई चिल्ला–चिल्ला कर दें; और अपने कुमार्ग से फिरें; और उस उपद्रव से, जो वे करते हैं, पश्चात्ताप करें।"

हम पाप में मरे हुए हैं और अन्धकार से लगाव रखते हैं।

यूहन्ना 3:20, "क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए।"

2 कुरिन्थियों 4:3–4, "परन्तु यदि हमारे सुसमाचार पर परदा पड़ा है, तो यह नष्ट होनेवालों ही के लिये पड़ा है। और उन अविश्वासियों के लिये, जिन की बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने अंधी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके।"

इफिसियों 5:8, "क्योंकि तुम तो पहले अन्धकार थे परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, अतः ज्योति की सन्तान के समान चलो।"

हम ज्योति से दूर भागते थे। हम आज्ञा न माननेवाले थे।

रोमियों 5:12–14, "इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया। व्यवस्था के दिए जाने तक पाप जगत में तो था, परन्तु जहां व्यवस्था नहीं वहां पाप गिना नहीं जाता। तौभी आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु ने उन लोगों पर भी राज्य किया, जिन्होंने उस आदम, जो उस आनेवाले का चिन्ह है, के अपराध के समान पाप न किया।"

उत्पत्ति 3 में आदम और हव्वा ने शैतान के बहकावे में आकर परमेश्वर की आज्ञा तोड़ी और सब मनुष्यों पर दण्ड आया। मेरे दोनों पुत्र यह सिद्ध कर रहे हैं जबकि वे अभी चार वर्ष और दो वर्ष की आयु ही के हैं। यह हमारा अनुवांशिक स्वभाव है। उत्पत्ति 8:21, "इस पर यहोवा ने सुखदायक सुगन्ध पाकर सोचा, "मनुष्य के कारण मैं फिर कभी भूमि को शाप न दूंगा, यद्यपि मनुष्य के मन में बचपन से जो कुछ उत्पन्न होता है वह बुरा ही होता है; तौभी जैसा मैं ने सब जीवों को अब मारा है, वैसा उनको फिर कभी न मारूंगा।"

आप कहेंगे कि आपने तो सदैव परमेश्वर से प्रेम किया है परन्तु वह कोई और परमेश्वर होगा जिसकी कल्पना आपने की। बाइबल के परमेश्वर का जहां तक प्रश्न है, आप उसके विद्रोही हैं। आप उससे घृणा करते हैं।

हम आज्ञा न माननेवाली सन्तान पापी लालसाओं के वश में हैं।

रोमियों 6:16–17, "क्या तुम नहीं जानते कि जिस की आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आप को दासों के समान सौंप देते हो उसी के दास होः चाहे पाप के, जिसका अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञाकारिता के, जिसका अन्त धार्मिकता है? परन्तु परमश्वेर का धन्यवाद हो कि तुम जो पाप के दास थे अब मन से उस उपदेश के माननेवाले हो गए, जिसके सांचे में ढाले गए थे।"

2 तीमुथियुस 2:25–26, "वह विरोधियों को नम्रता से समझाए, क्या जाने परमेश्वर उन्हें मन फिराव का मन दे कि वे भी सत्य को पहिचानें, और इसके द्वारा उसकी इच्छा पूरी करने के लिये सचेत होकर शैतान के फंदे से छूट जाएं।"

पाप के दास और शैतान के फंदे में!

हम नरक के लिए दण्डित थे।

यूहन्ना 3:18, "जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहरा चुका; इसलिये कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।"

रोमियों 5:10, "क्योंकि बैरी होने की दशा में उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ, फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएंगे?"

याकूब 4:4, "हे व्यभिचारिणियो, क्या तुम नहीं जानतीं कि संसार से मित्रता करनी परमेश्वर से बैर करना है? अतः जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह अपने आप को परमेश्वर का बैरी बनाता है।"

हम परमेश्वर के बैरी थे। इफिसियों 2 में हम अनन्त क्रोध के पात्र थे। आज सकारात्मक विचार के समर्थक कहते हैं कि आपको अपने ऊपर भरोसा रखना है, आपमें आत्मविश्वास होना है। आप तो मरे हुए हैं तो अपने आप में भरोसा एवं आत्मविश्वास कैसे रखेंगे।

एक प्रश्न है, मृतक जीवित कैसे होगा? कुछ नहीं। आपके लिए किसी और को कुछ करना होगा।

परमेश्वर ने अपने अनुग्रह से क्या किया, सुनें। मैं अन्धकार में पड़ा था, मृतक था, तो अपना मन परिवर्तन कैसे करता? परमेश्वर के अनुग्रह से किसी ने मेरे लिए कुछ किया।

इफिसियों 1:3–14, "हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक आशीष दी है। जैसा उसने हमें जगत की उत्पति से पहले उसमें

चुन लिया कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। और अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार हमें अपने लिये पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों, कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें उस प्रिय में सेंत–मेंत दिया। हम को उसमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है, जिसे उसने सारे ज्ञान और समझ सहित हम पर बहुतायत से किया। क्योंकि उसने अपनी इच्छा का भेद उस भले अभिप्राय के अनुसार हमें बताया, जिसे उसने अपने आप में ठान लिया था कि समयों के पूरे होने का ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे। उसी में जिसमें हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहले से ठहराए जाकर मीरास बने कि हम, जिन्होंने पहले से मसीह पर आशा रखी थी, उसकी महिमा की स्तुति के कारण हों। और उसी में तुम पर भी, जब तुम ने सत्य का वचन सुना जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है और जिस पर तुम ने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी। वह उसके मोल लिए हुओं के छुटकारे के लिये हमारी मीरास का बयाना है, कि उसकी महिमा की स्तुति हो।"

याह की स्तुति करो!

त्रिएक परमेश्वर पूरा हमारे उद्धार में क्रियाशील था। पिता ने हमारे उद्धार की योजना बनाई उसने हमें पहले से ही चुना और हमारा उद्धार किया। इससे पहले कि सूरज, चांद और तारे चमके या समुद्र में पानी की बूंद आई परमेश्वर ने हमसे प्रेम किया। उसने हमें मृतक देखकर कहा, "जीवन।" पवित्र परमेश्वर ने यह कैसे किया? यह काम पुत्र ने किया। उसने अपने लहू से हमारा उद्धार करवाया, हमें अपने लहू से खरीदा और पवित्र आत्मा हमारा उद्धार सुरक्षित रखता है। आत्मा हमारी आंखें खोल देता है और हमारा जीवन बदलता है। वह हमारी मृतक आत्मा को जीवन देकर परमेश्वर की महिमा और स्तुति प्रकट करता है।

क्या आपको इसकी महानता का बोध है? हम सोचते हैं कि हमारी गवाही जितनी अधिक नाटकीय हो उतना अच्छा है। सच तो यह है कि आप पाप में मरे हुए थे– आज्ञा न माननेवाले, पापी लालसाओं के वश में नरक के मार्ग पर थे। आप पवित्र परमेश्वर के क्रोध भाजक थे परन्तु इसी परमेश्वर ने पवित्र आत्मा द्वारा आपके जीवन में कहा, "मैं तुझे चाहता हूं। मैं अपना पुत्र तेरे स्थान में मरने को देता हूं कि तुझे खरीदे और तेरे पाप का दण्ड चुकाए कि तू मेरा हो जाए।" उसने आपको अपने पास बुलाया और पवित्र आत्मा दिया कि आपमें अन्तर्वास करे और आपको अनन्त उद्धार का विश्वास दिलाए। यह उबाऊ नहीं है, अति उत्तम है।

अतः कलीसिया का अर्थ है, मसीह में विश्वास द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह से बुलाए जाना।

उसकी कलीसिया –हम क्या हैं?

इब्रानियों 10:19–25, "इसलिये हे भाइयो, जब हमें यीशु के लहू के द्वारा उस नए और जीवते मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है, जो उसने परदे अर्थात् अपने शरीर में से होकर, हमारे लिये अभिषेक किया है, और इसलिये कि हमारा ऐसा महान् याजक है, जो परमेश्वर के घर का अधिकारी है, तो आओ, हम सच्चे मन और पूरे विश्वास के साथ, और विवेक का दोष दूर करने के लिये हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर परमेश्वर के समीप जाएं। आओ हम अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामें रहें, क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा की है, वह सच्चा है; और प्रेम, और भले कामों में उस्काने के लिये एक दूसरे की चिन्ता किया करें, और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखो त्यों–त्यों और भी अधिक यह किया करो।"

हम नई वाचा के प्रतिनिधि हैं। हमें परमेश्वर के निकट आने का हियाव है। हमें पवित्र स्थान में प्रवेश करने का साहस है, विश्वास है, स्वतंत्रता है, हियाव है।

निर्गमन 19 में परमेश्वर अपनी प्रजा को मिस्र से निकाल लाने के बाद उनके साथ वाचा बांधता है। उसकी आज्ञा थी, भय मानकर दूर रहना।

निर्गमन 19:18–22, "और यहोवा जो आग में होकर सीनै पर्वत पर उतरा था, इस कारण समस्त पर्वत धूएं से भर गया; और उसका धूआं भट्टे का सा उठ रहा था, और समस्त पर्वत बहुत कांप रहा था। फिर जब नरसिंगे का शब्द बढ़ता और बहुत भारी होता गया, तब मूसा बोला, और परमेश्वर ने वाणी सुनाकर उसको उत्तर दिया। और यहोवा सीनै पर्वत की चोटी पर उतरा; और मूसा को पर्वत की चोटी पर बुलाया, और मूसा ऊपर चढ़ गया। तब यहोवा ने मूसा से कहा, "नीचे उतरके लोगों को चितावनी दे, कहीं ऐसा न हो कि वे बाड़ा तोड़ के यहोवा के पास देखने को घुसें, और उनमें से बहुत नष्ट हों जाएं। और याजक जो यहोवा के समीप आया करते हैं वे भी अपने को पवित्र करें, कहीं ऐसा न हो कि यहोवा उन पर टूट पड़े।"

दूसरे शब्दों में वे परमेश्वर की महिमा देखकर भस्म हो जाएंगे। संपूर्ण पुराने नियम में परमेश्वर की महिमा का यही प्रभाव दिखाया गया है। पापी मनुष्य उसकी सर्वोच्च एवं अवर्णित महिमा के निकट कैसे आ सकता है? इसके तुरन्त बाद अध्याय 20 में दस आज्ञाएं हैं। अध्याय 25 में परमेश्वर ने उनसे प्रतिज्ञा की कि वह मण्डप में उनके मध्य वास करेगा। परन्तु महापवित्र परमेश्वर पापी मनुष्यों के मध्य कैसे वास करेगा?

अतः परमेश्वर व्यवस्था करता है। उसने प्रायश्चित दिवस पर वार्षिक बलि चढ़ाने की आज्ञा दी–

लैव्यव्यवस्था 16:29–30, "तुम लोगों के लिये यह सदा की विधि होगी कि सातवें महीने के दसवें दिन को तुम अपने अपने जीव को दुःख देना, और उस दिन कोई, चाहे वह तुम्हारे निज देश का हो चाहे तुम्हारे बीच रहने वाला कोई परदेशी हो, कोई भी किसी प्रकार का काम काज न करे; क्योंकि उस दिन तुम्हें शुद्ध करने के लिये तुम्हारे निमित्त प्रायश्चित्त किया जाएगा; और तुम अपने सब पापों से यहोवा के सम्मुख पवित्र ठहरोगे।"

प्रायश्चित का मूल अर्थ है, एक होना या मेल करना। परमेश्वर ने अपनी प्रजा को उसके साथ मेल करने की विधि बताई। उत्पत्ति 2 में परमेश्वर ने आदम और हव्वा से कहा था कि वे पाप करें तो निश्चय ही मर जाएंगे। अतः धर्मशास्त्र में आरंभ ही से पाप का दण्ड मृत्यु है। तो फिर पापी मनुष्य पवित्र परमेश्वर के साथ कैसे रह सकता है? वे मर जाएंगे।

अतः परमेश्वर ने यह व्यवस्था की। उनका दिन कृत्यों में विभाजित था।

लैव्यव्यवस्था 16:3–4, "जब हारून पवित्रस्थान में प्रवेश करे तब इस रीति से प्रवेश करे, अर्थात् पापबलि के लिये एक बछड़े को और होमबलि के लिये एक मेढ़े को लेकर आए। वह सनी के कपड़े का पवित्र अंगरखा, और अपने तन पर सनी के कपड़े की जांघिया पहिने हुए, और सनी के कपड़े का कटिबन्द, और सनी के कपड़े की पगड़ी बांधे हुए प्रवेश करे; ये पवित्र वस्त्र हैं, और वह जल से स्नान करके इन्हें पहिने।"

हारून पवित्र स्थान में जाएगा। वह महायाजक था। वह स्नान करके पवित्र वस्त्र धारण करके सिर पर पगड़ी डाल कर कमर में पटुका बांधेगा। परमेश्वर की उपस्थिति में वे अशुद्ध नहीं रह सकते थे। उन्हें एक निर्दोष, निष्कलंक मेम्ना बलि करना था। बलि चढ़ाने से क्या अभिप्राय था? मृत्यु और लहू। पाप की मजदूरी मृत्यु है। पशु की मृत्यु मनुष्य के पाप की मजदूरी का प्रतीक थी।

पहले महायाजक अपने लिए बलि चढ़ाएगा– लैव्यव्यवस्था 16:11, "हारून उस पापबलि के बछड़े को जो उसी के लिये होगा समीप ले आए, और उसको बलिदान करके अपने और अपने घराने के लिये प्रायश्चित्त करे।"

लैव्यव्यवस्था 15–16 में यही सब है।

लैव्यव्यवस्था 16:15–16, "फिर वह उस पापबलि के बकरे को जो साधारण जनता के लिये होगा बलिदान करके उसके लहू को बीचवाले पर्दे के भीतर ले आए, और जिस प्रकार बछड़े के लहू से उसने किया था ठीक वैसा ही वह बकरे के लहू से भी करे, अर्थात् उसको प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर और उसके सामने छिड़के। और वह इस्राएलियों की भांति भांति की अशुद्धता, और अपराधों, और उनके सब पापों के कारण पवित्रस्थान के लिये प्रायश्चित्त करे; और मिलापवाला तम्बू जो उनके संग उनकी भांति भांति की अशुद्धता के बीच रहता है उसके लिये भी वह वैसा ही करे।"

वह बलि के पशु, बकरे का लहू लेकर परम पवित्रस्थान में जाता था। वहां वाचा का सन्दूक था जिसके ऊपर प्रायश्चित का ढक्कन था। उसके ऊपर महायाजक लहू छिड़कता था जो मृत्यु का संकेत था परन्तु यह बलि प्रतिवर्ष चढ़ाना पड़ती थी– लैव्यव्यवस्था 16:34, "और यह तुम्हारे लिये सदा की विधि होगी कि इस्राएलियों के लिये प्रतिवर्ष एक बार तुम्हारे सारे पापों के लिये प्रायश्चित्त किया जाए।" यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार जो उसने मूसा को दी थी हारून ने किया।"

यह उनके पापों की स्मृति थी। यही इब्रानियों 10 में लिखा है– इब्रानियों 10:3–4, "परन्तु उनके द्वारा प्रति वर्ष पापों का स्मरण हुआ करता है। क्योंकि अनहोना है कि बैलों और बकरों का लहू पापों को दूर करे।"

बकरा तो मनुष्यों के पापों का दण्ड नहीं चुका सकता था।

नई वाचा –नये नियम में गंभीर परिवर्तन आता है। यहां भय मानकर दूर रहने की आज्ञा नहीं है। इब्रानियों 10:19 में लिखा है, विश्वास में निकट आओ। इब्रानियों 12:18–24, "तुम तो उस पहाड़ के पास, जो छुआ जा सकता था, और आग से प्रज्वलित था, और काली घटा, और अंधेरा, और आंधी के पास, और तुरही की ध्वनि, और बोलनेवाले के ऐसे शब्द के पास नहीं आए, जिसके सुननेवालों ने विनती की कि अब हम से और बातें न की जाएं। क्योंकि वे उस आज्ञा को न सह सकेः "यदि कोई पशु भी पहाड़ को छुए तो उस पर पथराव किया जाए।" और वह दर्शन ऐसा डरावना था कि मूसा ने कहा, "मैं बहुत डरता और

कांपता हूं।" पर तुम सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवते परमेश्वर के नगर, स्वर्गीय यरूशलेम, के पास और लाखों स्वर्गदूतों और उन पहिलौठों की साधारण सभा और कलीसिया, जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं, और सब के न्यायी परमेश्वर के पास, और सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं, और नई वाचा के मध्यस्थ यीशु और छिड़काव के उस लहू के पास आए हो, जो हाबिल के लहू से उत्तम बातें कहता है।"